ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-4* July- 2021
Anthology : The Research

विश्व शान्ति एवं मानवतावाद में जय प्रकाश नारायण की भूमिका

Role of Jai Prakash Narayan in World Peace and Humanism

Paper Submission: 05/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 25/07/2021

सुधाकर लाल श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
दी0द0उ0गो0 विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

बीसवीं शताब्दी की महानतम् विभूमि, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समर्पित देशभक्त, क्रान्तिकारी सेनानी, राष्ट्र नवनिर्माण के अग्रदूत, भारतीय समाजवाद के प्रतिष्ठाता गांधीवादी सर्वोदयी जय प्रकाश नारायण अपने विद्यार्थी जीवन से ही राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सक्रिय थे, अध्ययन के लिए अमेरिकी प्रवास में वह मार्क्सवादी हो गये और जीवन के अन्तिम दिनों में सर्वोदयी गांधी हो गये और जीवन के मार्क्सवाद से समाजवाद और समाजवाद से सर्वोदयी गांधीवाद तक की लम्बी यात्रा का उन्होंने आधार भी स्पष्ट किया।

Greatest leader of the twentieth century, dedicated patriot of Indian independence movement, revolutionary fighter, pioneer of nation building, Gandhian Sarvadayi Jai Prakash Narayan, the founder of Indian socialism, was active in national programs from his student life. He became a Marxist during his stay in America for studies and became Sarvadayi Gandhi in the last days of his life and he also clarified the basis of life's long journey from Marxism to Socialism and from Socialism to Sarvadayi Gandhism.

मुख्य शब्द : मार्क्सवाद, समाजवाद, साम्राज्यवाद संयुक्त राष्ट्रसंघ, पाकिस्तान, निशस्त्रीकरण सिताबदियारा, सोवियत, मानवतावाद गांधीवादी सर्वोदयी, फेनर ब्राकवे सोरेन सेन।

Marxism, Socialism, Imperialism, United Nations Organization, Pakistan, Disarmament Sitabdiara, Soviet, Humanism, Gandhian Sarvadayi, Fenner Brockway Soren Sen.

प्रस्तावना

जय प्रकाश नारायण सम्पूर्ण विश्व में शान्ति के हिमायती थे जहां भी लोकतंत्र पर कुठाराघात हुआ या जनता का दमन हुआ जयप्रकाश नारायण ने उसका विरोध किया उनकी विश्व दृष्टि देश और काल की सीमा से प्रभावित नहीं थी। इसी कारण स्वतंत्रता आन्दोलन के समय ही वे विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना चुके थे। 1940 के रामगढ़ अधिवेशन के समय स्वतंत्र भारत के भावी नीतियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा था कि स्वतंत्र भारत राष्ट्रों के बीच शान्ति स्थापना के लिए कार्य करेगा तथा शस्त्रीकरण का पूर्ण विरोध करेगा।[1]

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय समाजवाद के प्रतिष्ठाता जय प्रकाश नारायण का दर्शन भारतीय सन्दर्भ की उपस्थिति किन्तु वे सम्पूर्ण विश्व में मानवता और शान्त के पक्षधर थे। वे सशक्तिकरण के विरोध में हमेशा खड़े रहे चाहे चीन का मामला हो पाकिस्तान या सोवियत, हंगरी सभी देशों में मैत्रीपूर्ण हस्तक्षेप किया, उन्होंने कहा कि जब तक साम्राज्यवाद और सर्वाधिकारवाद की स्थिति बनी रहेगी तब तक विश्व में अशान्ति बनी रहेगी। उन्होंने विश्व शान्ति के लिए विश्व के अनेक प्रख्यात समाजवादियों से सम्पर्क स्थापित किया। उनकी कार्यशैली से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सभी राष्ट्राध्यक्ष प्रभावित थे और उनका सम्मान भी करते थे। शोध पत्र के माध्यम से जय प्रकाश नारायण के अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के प्रयास को जन सामान्य तक पहुचाना है।

विषय विस्तार

जनवरी 1953 में रंगून के पहले एशियायी समाजवादी सम्मेलन में ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री एटली और यूगोस्लाविया के तत्कालीन उप–प्रधानमंत्री मिलोवन जिलास सहित प्रख्यात समाजवादी नेताओं के बीच जय प्रकाश ने समाजवाद की सैद्धान्तिक समस्याओं पर अपने सारगर्भित भाषण से सभी प्रतिनिधियों को प्रभावित किया उन्होंने कहा समाजवाद नब्बे प्रतिशत व्यवहार है और दस प्रतिशत सिद्धान्त है। उनके सर्वोदय दर्शन का आधार भी शान्तिपूर्ण जीवन का निर्माण था जयप्रकाश नारायण ने साम्यवाद को इस दृष्टि से विशेष रूप से खण्डित किया कि वह बाद में भी एक तरह का साम्राज्यवाद ही है, चूंकि जयप्रकाश के अनुसार साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का आधार शोषण और दमन है। अतः वे उपनिवेशवाद और साम्यवाद के आलोचक रहे है।[3]

जयप्रकाश नारायण सर्वदा शस्त्रीकरण के विरोध में रहे, उन्होंने पाकिस्तान के शस्त्रीकरण तथा अमेरिकी नेताओं द्वारा तेल उत्पादक देशों हेतु किये गये व्यवधान तथा डियोगोगार्सिया देश के निर्माण आदि की ओर संकेत करते हुए इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि अभी भी साम्राज्यवाद का अन्त नहीं हुआ है।[4] उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक मानव समाज में सामन्तवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, सर्वाधिकारवाद की स्थिति बनी हुयी है तब तक मानव अशान्ति बनी रहेगी। उन्होंने कहा कोई भी युद्ध मानवता के विरूद्ध जुर्म है जो विनाश की ओर ले जाता है।

चीन द्वारा तिब्बत पर आक्रमण और व्यापक नरसंहार पर जे0पी0 ने नेहरू की भी आलोचना किया और कहा यदि भारत ने इसका विरोध किया होता तो तिब्बत को गुलाम नहीं बनाया जा सकता था। चीनी कार्यवाही के विरोध में 30–31 मार्च 1959 को कलकत्ता में तिब्बत मसले पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन की अध्यक्षता किया और इस मुद्दे पर एशियायी और अफ्रीकी देशों की एक समिति बनाने के लिए समरगुहा और एच0आर0 पार्डीवाला को दक्षिण–पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया एवं अफ्रीकी नेताओं के समर्थन के लिए भेजा। 9 अप्रैल 1960 को दिल्ली में तिब्बत पर और एशिया तथा अफ्रीका में उपनिवेशवाद के विरूद्ध एफ्रो–एशियन कन्वेशन में जे0पी0 ने तिब्बती नागरिकों पर चीनियों के अत्याचार का विरोध किया। सम्मेलन में तिब्बत पर विश्व जनमत तैयार करने तथा मानवाधिकार के कथित हनन एवं बौद्ध बिहारों को नष्ट करने की रिपोर्ट की जांच के लिए तथा तटस्थ देशों के अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की व्यवस्था के लिए जयप्रकाश नारायण को अधिकृत किया गया, जिन्होंने चीन के विरूद्ध विश्वव्यापी जनमत तैयार कर तिब्बतियों के स्वयं निर्णय की स्वतंत्रता पर बल दिया।[5]

1956 में सोवियत संघ ने हंगरी पर आक्रमण किया तो वहां भी जयप्रकाश नारायण ने इसकी तीव्र आलोचना किया उन्होंने कहा जब पश्चिमी देशों के साम्राज्यवाद की निन्दा की जाती है तो रूसी साम्राज्यवाद का विरोध न करना अनैतिक है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधि वी0के0 कृष्ण मेनन ने जब हंगरी की समस्या को उनके घर का मामला बताया तो जे0पी0 ने सोवियन रूस की कृत्यों की निन्दा और विरोध करते हुए कहा कि एक ओर हंगरी के नौजवान दूसरी ओर रूस के टैंक किस घर में ऐसा होगा?[6] इसी प्रकार 1968 में चेकोस्लोवाकिया में भी रूसी हस्तक्षेप का विरोध किया और वक्तव्य जारी किया कि जंगल का कानून ही आज भी साम्यवादी दुनिया में चल रहा है।[7]

जयप्रकाश नारायण ने 1961 में भारतीय सेना का गोवा में प्रवेश का विरोध किया और भारत को अपने पड़ोसी राज्य वर्मा, श्रीलंका, मलाया, पाकिस्तान, नेपाल आदि से समीप्य स्थापित करने का आग्रह किया।[8] उन्होंने 1962 में विश्व शान्ति सेना के सह–अध्यक्ष की हैसियत से कीनिया की यात्रा अपनी पत्नी प्रभावती के साथ किया और वहां अपने वरिष्ठ अफ्रीकी नेताओं, तजानियां के राष्ट्रपति जूलियस न्यरेरे, हैस्टिंग्स बांडा और केनिथ कौंडा के साथ कीनिया, जंजीबर, मोजाम्बिक, दार–एस–सलाम और तजांनिया तक की यात्रा में अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए अनेक सभाओं को सम्बोधित किया और इसी समय संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा ने ब्रिटेन को रोडेशिया की पूर्ण आजादी की घोषण के लिए राजी कर लिया।

भारत–चीन के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित के लिए जे0पी0 ने 1963 में गांधी समाधि स्थल से शंकरदेव के नेतृत्व में पेइचिंग के लिए 19 शान्ति यात्रियों को रवाना किया। जिसमें रेवरेंड माइकेल स्काट के अलावा 11 भारतीय, 4 अमेरिकी एक आस्ट्रियायी एवं एक जापानी बौद्ध भिक्षु को भेजा। यद्यपि चीनी शान्ति कमेटी ने इसे चीन के विरूद्ध जे0पी0 का षड़यंत्र कहकर शान्ति यात्रियों को वर्मा सीमा पर रोक दिया फिर भी जे0पी0 ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खाँ से पूर्वी पाकिस्तान के रास्ते यात्रा की इजाजत मांगी परन्तु विदेश मंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने 11 जून 1963 को जवाब दिया कि वे ऐसा कोई स्वयं नहीं करेंगे जिसमें चीन को गलतफहमी हो।

जे0पी0 ने जिम्बावे के केनेथ कौंडा और तंजानिया के जुलियस न्यरेरे जैसे प्रभावशाली विश्व नेताओं को पत्र लिखकर चीन में शान्ति यात्रियों के लिए अनुमति का प्रयास किया परन्तु चीन के प्रतिनिधियों ने कहा कि अनुमति तभी दी जायेगी जब जे0पी0 को शान्ति मार्च से अलग कर दिया जायेगा, इस प्रस्ताव पर कोई तैयार नहीं हुआ। यद्यपि दिल्ली–पेइचिंग शान्ति मार्च अधूरा रहा फिर भी जे0पी0 के इस प्रयास की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा की गयी। 1965 में जे0पी0 काश्मीर में पाकिस्तानी आक्रमण के विरूद्ध आवाज उठाया तथा विवाद को समझौता वार्ता से हल करने का सुझाव दिया।[9]

1969 में पश्चिमी पाकिस्तान के विरूद्ध विद्रोह होने पर जे0पी0 ने सार्वजनिक रूप से कहा कि धार्मिक एकता के बावजूद भी पाकिस्तान के दो टुकड़े एक दूसरे से दूर जा रहे है, शेख मुजीबुर्रहमान की पूर्ण स्वायत्तता की मांग पर पाकिस्तान ने दमनचक्र द्वारा नरसंहार किया। 16 मार्च 1971 को शेख की अपील पर जे0पी0 ने उत्तर दिया कि अपने देश की क्षेत्रीय एकता की तरह पाकिस्तान को भी टूटते नहीं देखना चाहते किन्तु जब बंगला देश में नरसंहार और सेना का दमनचक्र बढ़ता जा रहा था तो जे0पी0 ने अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया और 25

मार्च 1971 को अपने पैतृक गांव सिताबदियरा से अपने वक्तव्य में राष्ट्रपति याहिया खाँ की कठोर निन्दा किया और जन साधारण, बुद्धिजीवियों के बीच धर्म निरपेक्ष शक्ति के निर्माण करने के लिए मुजीबुर्रहमान के मोर्चे की सराहना किया।[10] उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के सभी प्रतिमानों के अनुसार वही पाकिस्तान के सच्चे शासक है फिर भी अल्पमत बहुमत को दबाने का प्रयास कर रही है। 2 अप्रैल 1971 को पटना से लम्बी विज्ञप्ति जारी करके बंगलादेश को समर्थन देने के लिए भारतीय संसद और बिहार, उत्तर प्रदेश, असम एवं त्रिपुरा के विधानमण्डलों की प्रशंसा किया और बंगलादेश को तुरन्त मान्यता देने तथा वहा की जनता को राहत पहुंचाने और श्रीमती गांधी से बातचीत कर बंगलादेश के पक्ष में जनमत तैयार करने के लिए यूगोस्लाविया के मार्सलटीटो और मिस्त्र के अनवर सादात में भेंट किया और अमेरिका के हेनरी किसिंजर को भी अपने पक्ष में कर लिया।

बंगलादेश के सन्दर्भ में ही जे0पी0 ने 1971 की भारत–सोवियत मैत्री का समर्थन किया और बंगलादेश की मुक्तिवाहिनी और काम चलाऊ सरकार से सम्पर्क बनाकर त्रिपुरा के रास्ते पूर्वी पाकिस्तान के मुक्त केन्द्र तक जा कर उसे हथियार के लिए धन की व्यवस्था कराया इसके लिए बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर से भी 2 लाख रूपये दिलवाए। 31 जनवरी 1972 को मुजीबुर्रहमान को एक आत्मीय पत्र लिखकर गांधी के बताए रास्ते पर चलने की सलाह दिया।

जे0पी0 का कहना था कि यदि भारत किसी गुट से जुड़ता है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति में व्यवधान उत्पन्न करेगा। भारत की आत्म सुरक्षा हेतु सैन्य बल की तैयार पर उन्होंने इस तथ्य को महसूस करने की सलाह दिया कि शस्त्रीकरण वास्तविक सुरक्षा नहीं दे सकता।[11] उन्होंने स्पष्ट कहा कि आज भी मानव समाज में सामन्तवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, सर्वाधिकारवाद की स्थिति बनी हुयी है। जबतक ये बातें विद्यमान रहेगी विश्व में अशान्ति बनी रहेगी और युद्ध का क्रम चलता रहेगा, युद्ध विनाश की ओर ले जाता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय निशस्त्रीकरण में विश्वास करते हुए सभी आणविक शस्त्रों को विनष्ट करने का सुझाव भी दिया।[12]

जय प्रकाश नारायण गुट निरपेक्षता के प्रबल समर्थक रहे और भारत को शक्ति गुटों से अलग रहने की सलाह भी दिया।[13] विश्व के प्रख्यात समाजवादियों से जे0पी0 के अच्छे सम्बन्ध थे, इजराइल के समाजवादी नेता प्रधानमंत्री बेनगुरियों से गहरी मित्रता थी। यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्सल टीटो जे0पी0 से मिलने सोसलिस्ट पार्टी दफ्तर तक आये। ब्रिटेन ने लेबर पार्टी के नेता एटली, हेराल्ड लास्की, फेनरब्राकवे, नोएल बेकर, न्यूरेन बेवान, ह्यूगैटस्केल जे0पी0 के अन्तर्राष्ट्रीय विचारों को सम्मान करते थे। प्रसिद्ध गांधीवादी अमेरिकी नेता मार्टिन लूथर किंग तो जे0पी0 से मिलने शोखदेवरा आश्रम तक गये, जे0पी0 ने उनके सम्मान में पटना में एक गोष्ठी भी आयोजित किया। जर्मनी के विली ब्रान्ट तथा प्रख्यात जर्मन अर्थशास्त्री शुमाखर उनके गहरे मित्र थे। मिस्त्र के राष्ट्रपति अबुल गमाल नासिर, इण्डोनेसिया के राष्ट्रपति सुकार्णो तथा अबरलीग के सेक्रेटरी जनरल डॉ0 क्लोविस मकसूद जे0पी0 की अन्तर्राष्ट्रीय कार्य शैली से काफी प्रभावित थे क्योंकि जे0पी0 सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र की स्थापना के लिए प्रयासरत थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य स्थायी रूप से शान्ति ही चाहता है फिर भी समाज में हिंसा जीवित है।[14]

अन्तर्राष्टीय स्तर पर निष्पक्ष विचारों और विश्व मानवतावाद के कारण ही स्वाधीनता संग्राम के दिनों में भी 1945 में जे0पी0 की रिहायी के लिए लन्दन की लेबर पार्टी ने प्रख्यात नेता फेनर ब्राकवे नोएल बेकर, सोरेन सेन के नेतृत्व में रैली निकाली थी। इसी समय फेनर ब्राकवे ने कहा था कि लेलिन के बाद जे0पी0 सबसे बड़े समाजवादी नेता हैं। बिना किसी पद पर रहने के बाद भी उनके महाप्रयाण पर 36 देशों के शोक संवेदना सन्देश के साथ संयुक्त राष्ट्रसंघ का झण्डा भी झुकाया गया।

जे0पी0 सत्य के ऐसे अन्वेषक थे, जो रूढि का अनुगामी नहीं होता जहां भी विश्व मानवता को जे0पी0 की आवश्यकता हुयी जे0पी0 ने ऐसी ललकार को स्वीकार किया। इतना निर्विवाद है कि बीसवीं शताब्दी के नेताओं में महात्मा गांधी के बाद जयप्रकाश नारायण को ही एक साथ प्रशंसा और आलोचना मिलती रही है, गांधी जी की तरह जयप्रकाश नारायण ने भी कोई पद नहीं सम्भाला, इसीलिए गांधी जी की तरह त्याग और नैतिकता के महातुला पर वे अतुलनीय रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *जयप्रकाश नारायणःसोसलिज्म सर्वोदय एण्ड डेमोक्रेसी (सम्पादक विमल प्रसाद) बाम्बे एसिया पब्लिसिंग हाउस, 1964 पृ0–37*
2. *जयप्रकाश नारायण : दी ड्वेल रिवोल्यूशन, तन्जौर अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन 1959 पृ0–1*
3. *इन्टरनेशनल एड्रेस ऑफ जे0पी0 एट दी वार रेसीस्टर्स, दिसम्बर 21–27 1960 पृ0–2*
4. *जयप्रकाश नारायण : इम्पेरियेलिज्म, दी इण्डिया नेशनल, 28 फरवरी, 1975 पृ0–1*
5. *जनताः भाग–5, नं0–2, जनवरी 30, 1950, पृ0–4*
6. *अजीत भट्टाचार्य : जयप्रकाश नारायण, न्यू दिल्ली विकास पब्लिसिंग हाउस 1978, पृ0–159*
7. *जयप्रकाश नारायण : समाजवाद सर्वोदय और लोकतंत्र, बाम्बे एशिया पब्लिसिंग हाउस, 1964, पृ0–103*
8. *जनता : भाग 17, नं0–41, नवम्बर 11, 1962, पृ0–2*
9. *जनता : भाग–20, नं0–39, अक्टूबर 17, 1965, पृ0–3*
10. *जनता : भाग–26 नं0–41, अक्टूबर 24, 1971, पृ0–5*
11. *दी सर्च लाइट : पटना (दैनिक) मई, 1963*
12. *ऐलेन एण्ड वैन्डी स्कार्फः जयप्रकाश नारायण : दी ओरिएट लांगमैन, नई दिल्ली, पृ0–77*
13. *जयप्रकाश नारायण : दी बेसिक प्रावलम्ब ऑफ फ्री इण्डिया, पृ0–39*
14. *भोला सिंह : दी पोलिटिकल आइडियाज ऑफ एम0एन0 राय एण्ड जय प्रकाश नारायण, आशीष पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली, 1985 पृ0–234*